कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here




- हम जानते हैं कि
- जुलाई 1944 में अमेरिका के न्यू हैम्पशर के ब्रेटन वुड्स नामक स्थान पर
- संयुक्त राष्ट्र मौद्रिक एवं वित्तीय सम्मेलन का आयोजन किया गया था।
- जिसमें औद्योगिक देशों के व्यापार की जरूरतों के लिए 'अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष'
- तथा युद्धोत्तर पुनर्निर्माण के लिए विश्व बैंक की स्थापना की गई थी।
- जिन्हें ब्रेटन-वुड्स संस्थान कहा गया।

प्रारंभिक युद्धोत्तर वर्ष :-

- ब्रेटन-वुड्स व्यवस्था ने पश्चिमी औद्योगिक राष्ट्रों और जापान के लिए व्यापार तथा आय में वृद्धि के लिए एक अप्रतिम युग का सूत्रपात किया।
- 1950 से 1970 तक विश्व व्यापार की विकास दर सालाना 8 प्रतिशत से भी ज्यादा रही।
- इस दौरान वैश्विक आय में लगभग 5 प्रतिशत की दर से वृद्धि हो रही थी।
- विकास दर भी लगभग स्थिर हो गयी थी उसमें ज्यादा उतार-चढ़ाव नहीं आये।
- इस दौरान ज्यादातर औद्योगिक देशों में बेरोजगारी औसतन 5 प्रतिशत की दर से कम ही रही।
- इस दौरान तकनीक व उद्यम का विश्वव्यापी प्रसार हुआ। ।
- विकासशील देश विकसित औद्योगिक देशों के बराबर पहुँचने की जीतोड़ कोशिश कर रहे थे।
- इसके लिए उन्होंने आधुनिक तकनीक से चलने वाले संयंत्रों और उपकरणों के आयात पर बेहिसाब पूँजी का निवेश किया।

अनौपनिवेशीकरण और स्वतंत्रता :-

- दूसरा विश्व युद्ध खत्म होने के बाद भी विश्व का एक बहुत बड़ा भाग यूरोपीय औपनिवेशिक शासन के अधीन था।
- अगले दो दशकों में एशिया और अफ्रीका के ज्यादातर उपनिवेश स्वतंत्र स्वाधीन राष्ट्र बन चुके थे।
- लेकिन ये सभी देश गरीबी व संसाधनों की कमी से जूझ रहे थे।
- उनकी अर्थव्यवस्थाएँ लंबे समय तक अधीन रहने के कारण अस्त-व्यस्त हो चुकी थी।
- I.M.F. और विश्व बैंक का गठन तो औद्योगिक देशों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए ही किया

LET'S LEARN TOGETHER
Download Mission Gyan App



PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

गया था।

- ये भूतपूर्व उपनिवेशों में गरीबी की समस्या और विकास की कमी से निपटने में दक्ष नहीं थे।
- लेकिन जिस प्रकार यूरोप और जापान ने अपनी अर्थव्यवस्थाओं का पुनर्गठन किया था उसके कारण ये देश I.M.F. और विश्व बैंक पर निर्भर भी नहीं थे।
- तब 1950 के दशक के अंत में जाकर I.M.F. तथा विश्व बैंक ने विकासशील देशों पर ध्यान देना प्रारम्भ किया।
- विडंबना की बात यह थी कि वे राष्ट्र जो उपनिवेशों के रूप में पश्चिमी साम्राज्यों के अधीन रहे थे। उनको अब स्वतंत्र होने के बाद भी अपने देश के पिछड़ेपन को दूर करने के लिए ऐसे अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों की मदद लेनी पड़ी जिन पर भूतपूर्व औपनिवेशिक शक्तियों का ही नियंत्रण था।
- बहुत साल बीत जाने के बाद भी बहुत सारे नव-स्वाधीन राष्ट्रों की अर्थव्यवस्थाओं पर अब भी औपनिवेशिक शक्तियों का ही नियंत्रण था।
- जो देश ब्रिटेन और फ्रांस के उपनिवेश रह चुके थे। वहाँ पर अब भी उनके महत्त्वपूर्ण संसाधनों, जैसे खनिज संपदा पर ब्रिटेन और फ्रांस की कंपनियों का ही नियंत्रण था और वे इस नियंत्रण को छोड़ने के लिए किसी भी कीमत पर तैयार नहीं थे।
- कई बार अमेरिका जैसे अन्य शक्तिशाली देशों की बहुराष्ट्रीय कंपनियां भी विकासशील देशों के प्राकृतिक संसाधनों का बहुत कम कीमत पर दोहन करने लगती थीं।

बहुराष्ट्रीय कंपनी :- एक साथ बहुत सारे देशों में व्यवसाय करने वाली कंपनियों को बहुराष्ट्रीय कंपनी कहा जाता है। (मल्टी-नेशनल कॉर्पोरेशन)

- शुरूआती बहुराष्ट्रीय कंपनियों की स्थापना 1920 के दशक में की गई थी।
- 1950 व 1960 के दशकों में जब अमेरिकी व्यवसाय दुनिया भर में फैलते जा रहे थे तथा साथ ही पश्चिमी यूरोप व जापान भी विश्वयुद्ध के प्रभाव से बाहर निकलते हुए शक्तिशाली राष्ट्र बनने की ओर अग्रसर थे उस समय ऐसी बहुत सारी नई कंपनियां सामने आईं।
- अत: 1950 व 1960 के दशकों की विशेषता इन बहुराष्ट्रीय कंपनियों का विश्वव्यापी प्रसार था।
- इसका एक कारण यह भी था कि उस समय ज्यादातर सरकारें बाहर से आने वाली चीजों पर भारी आयात शुल्क वसूल करती थीं जिसके कारण इन बड़ी कंपनियों को अपने संयंत्र उन्हीं देशों में लगाने पड़ते थे जहां वे अपना माल बेचना चाहती थीं।
- उन्हें 'घरेलू उत्पादकों' के रूप में काम करना पड़ता था।

- दूसरी ओर ज़्यादातर विकासशील देशों को पचास और साठ के दशक में पश्चिमी अर्थव्यवस्थाओं की तेज प्रगति से कोई लाभ नहीं हुआ।
- इस समस्या को देखते हुए उन्होंने एक नयी अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक प्रणाली (New International Economic Order–NIEO) विकसित करने के लिए आवाज़ उठाई।
- ये G-77 (समूह-77) के रूप में संगठित हो गए।
- N.I.E.O. के द्वारा वे एक ऐसी व्यवस्था चाहते थे जिससे उन्हें अपने संसाधनों पर सही मायनों में नियंत्रण मिल सके।

Mission Gyan App
भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति



PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- उन्हें विकास के लिए अधिक सहायता मिले, कच्चे माल के सही दाम मिलें तथा तैयार मालों को विकसित देशों के बाज़ारों में बेचने के लिए सही अवसर मिले।

ब्रेटन वुड्स का समापन और 'वैश्वीकरण' की शुरुआत :-

- सालों से हो रही तेज़ वृद्धि के बावजूद युद्धोत्तर दुनिया में सब कुछ सही नहीं चल रहा था।
- विदेशों में भारी लागत के कारण अमेरिका की वित्तीय और प्रतिस्पर्धी क्षमता कमज़ोर हो गयी थी।
- अमेरिकी डॉलर अब दुनिया की प्रधान मुद्रा के रूप में पहले जितना सम्मानित नहीं रह गया था।
- सोने की तुलना में डॉलर की कीमत गिरने लगी थी।
- इसके साथ स्थिर विनिमय दर की व्यवस्था विफल हो गई तथा अस्थिर विनिमय दर की व्यवस्था शुरू की गई थी।

विनिमय दर :- इसमें अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की सुविधा के लिए विभिन्न देशों की राष्ट्रीय मुद्राओं को एक-दूसरे से जोड़ा जाता है। यह दो प्रकार की होती है -

1. स्थिर विनिमय दर :- इस विनिमय दर में मुद्रा पर आने वाले उतार-चढ़ावों को नियंत्रित करने के लिए सरकार को हस्तक्षेप करना पड़ता है
2. अस्थिर या परिवर्तनशील विनिमय दर :- यह विनिमय दर विभिन्न मुद्राओं की माँग या आपूर्ति के आधार पर सरकारों के हस्तक्षेप के बिना घटती-बढ़ती रहती है।

- 1970 के दशक के मध्य तक विकासशील देश कर्ज़ और विकास संबंधी सहायता के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों की शरण ले सकते थे।
- लेकिन अब उन्हें इन संस्थानों से कर्ज़ न लेने के लिए बाध्य किया जाने लगा।
- इसलिए इन विकासशील देशों में समय-समय पर क़र्ज़ संकट पैदा होने लगा।
- इससे आय में गिरावट आती थी और गरीबी बढ़ने लगती थी।
- अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में यह समस्या सर्वाधिक थी।
- औद्योगिक विश्व भी बेरोज़गारी की समस्या में फँसने लगा था।
- बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भी ऐसे देशों में उत्पादन करने लगीं जहाँ वेतन कम थे।
- चीन 1949 की क्रांति के बाद विश्व अर्थव्यवस्था से अलग-थलग ही था।
- परंतु चीन में नयी आर्थिक नीतियों और सोवियत खेमे के बिखराव के बाद बहुत सारे देश दोबारा विश्व अर्थव्यवस्था का अंग बन गए।
- चीन में वेतन अन्य देशों की तुलना में कम थे। अतः बहुत सारी विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने वहाँ जमकर निवेश करना शुरू कर दिया।
- इसलिए हमारे ज़्यादातर टेलीविज़न, मोबाइल फोन और खिलौने चीन में बने होते हैं।
- इसका कारण चीन में अल्प लागत अर्थव्यवस्था वहाँ के कम वेतनों का नतीजा है।
- उद्योगों को कम वेतन वाले देशों में ले जाने से व्यापार और पूँजी प्रवाह की दिशा ही बदल गई जिससे भारत, चीन और ब्राज़ील की अर्थव्यवस्थाओं में भारी बदलाव आने लगे हैं।
- दुनिया का आर्थिक भूगोल पूरी तरह से बदल चुका है।

Download Mission Cyan App



PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here